Yashoda Girls' Arts & Commerce College, Nagpur

Project in Home Economics

Session: 2017-2018

Name of the Project: Project on Childhood Development

Number of Students Enrolled: 09

Name of Co-ordinator : Prof. Rekha Meshram

Brief Report on Completion of Project

Academic Year- 2017-2018

Name of the Project Undertaken	Project on Childhood Development
Academic Session	2017-2018
Organizing Department/ Committee	Department of Home Economics
Total number of students Participated in the project	09
Brief Report	The Project entitled Childhood Development was undertaken by the Department of Home Economics during the session 2017-2018 under the guidelines of the Internal Quality Assurance Cell of the institution. Total 09 students participated in the project activity and successfully completed the project. The completion certificates have been given to the students. All the students found it very interesting to learn through the experiential learning. They enjoyed the project work.
Criterion No. 1	Metric No:-1.3.2

Signature of Activity Co-ordinator	Signature and Stamp of IQAC Co-ordinator	Signature & Stamp of Principal
	Co-ordinator, IQAC Yashoda Girls' Arts & Commerce College, Nagpur	Principal Yashoda Girls Arts & Commerce College,Sneh Nagar,Nagpur-15

Department of Home Economics

Name of Project- Project on Childhood Development

Academic Session- 2017-18

List of students completing project-

Sr. NO.	Name of students	Program
1	BHARTI MAHESH HARANKHEDE	B.A.
2	DIKSHA BABAN THOOL	B.A.
3	GAYATRI BABAN LAXNE	B.A.
4	KIRAN GHANSHYAM GABHANE	B.A.
5	POOJA SUKHACHAND BAHESHWAR	B.A.
6	RUPALI NARENDRA BOBDE	B.A.
7	REKHA SITARAM AMBAGDE	B.A.
8	RAJANI MAHADEV KACHEWAR	B.A.
9	SHALU KISNA PATIL	B.A.

Signatue of Project Co-ordinator

IQAC Coordinator

Co-ordinator, IQAC
Yashoda Girls' Arts &
Commerce College, Nagpur

Principal

Principal
Yashoda Girls Arts & Commerce
College,Sneh Nagar,Nagpur-15

YASHODA GIRLS ARTS AND COMMERCE COLLEGE

Sneh Nagar, Nagpur

DEPARTMENT OF HOME ECONOMICS

ASSIGNMENT

Name of Students : Swati M. Hemnani

Class : BA VIth **Semester**

Subject : Child Development स्वाति

Topic : Prechildhood (2 to 6 year)

Name of Guide : Prof. Rekha L. Meshram

Early childhood physical Development

2017/18

Certificate

Certified that the Practicals written in this practical notebook is satisfactorily performed by

Master/Miss Swati Manoj Hemnani

Class B.A Final Sec VIth Roll. No. ______

During the Academic session ______

______ Date

______ Teacher Incharge

PRINCIPAL
Yashoda Girls Arts & Commerce College
Sneh Nagar, Nagpur-15

______ Seal of School / College

______ Sig. of H.O.D. / Principal

BHAGWATI
PAGE NO. :
DATE :

Name of Practical

क्र.	अनुक्रमणिका	पेज नं:
	पूर्वबाल्यावस्था दो से छे साल	
1)	प्रस्तावना	1
2)	परिभाषा	1
3)	पूर्वबाल्यावस्था के विकासात्मक कार्य	2 से 5
4)	पूर्वबाल्यावस्था में बालकों के विकासात्मक कार्य का महत्व	6
5)	शारिरीक विकास में आस्थि विकास	7

Teacher's Signature .....

BHAGWATI
PAGE NO.: 1
DATE :

Name of Practical

पूर्वबाल्यावस्था दो से छे साल

प्रस्तावना :- बच्चों का विकास गर्भधारणा से लेकर मृत्यु तक शुरू रहता है। बाल विकास में बच्चों का गर्भधारण से लेकर किशोरावस्था तक अध्ययन किया जाता है। पढ़ाई के दृष्टि से सुविधा जनक होने के लिए विविध अवस्थाओं में विभाजन किया गया है। मुख्य वर्गीकरण जन्मपूर्व विकास और जन्मोत्तर विकास ऐसा किया गया है। इसमें पूर्वबाल्यावस्था याने क्या ? पूर्वबाल्यावस्था अवस्था की विशेषताएँ इस अवस्था में होनेवाले विभिन्न विकास वर्तन - समस्या खेल आदि का अध्ययन होता है।

बालकों के विकास की दृष्टि से यह कालावधि अधिक महत्वपूर्ण होता है। बच्चे परावलंबन से बाहर निकलके स्वावलंबन की ओर चलने लगते हैं। परिवार के सिवाए आजू - बाजू के लोगों से उनकी पहचान होती है और मिल जुलकर रहते हैं। इस कारण बच्चों का सामाजिक और भाषा विकास होता है।

परिभाषा :- 1) A. B हॉरलॉक के मतानुसार :- पूर्व-बाल्या अवस्था याने दो से छे साल का कालावधि होता है। 2) दो से छ परिपक्वता का कालखंड याने बाल्यावस्था बच्चों की विकास की दृष्टि से महत्वपूर्ण याने पूर्वबाल्मावस्था है।

Teacher's Signature .....

Name of Practical

पूर्वबाल्यावस्था के विकासात्मक कार्य

पूर्वबाल्यावस्था में बालकों का विकास तीव्रगति से होता है। शारिरिक वृद्धि और कारक कौशल्य का विकास इसके कारण पूर्वबाल्यावस्था में बच्चों की क्रियाशीलता वृद्धि है। बालक खुद करने का काम, खुद करने का प्रयास करते है। खुद के परिवार के अलावा पडोसी, दोस्त, ऐसा वातावरण भी समझ लेते है।

बच्चों के विकासात्मक कार्य याने मलमुत्र विसर्जन नियंत्रण रखते है। खाना खाने का समय, सोने का समय निश्चित होता है। शैशवावस्था में जो क्रिया बच्चे करते है वही क्रियाओं का पूर्वबाल्यावस्था में कौशल्य प्राप्त करते है। पूर्वबाल्यावस्था में विकासात्मक कार्य अधिक क्रियाशील होते है। वह कार्य निम्नलिखित है।

1) मलमुत्र विसर्जन पर नियंत्रण :- पूर्वबाल्यावस्था में बालक खुद को ज्यादा और सुखा रखने का प्रयत्न करते है। इस उम्र में महत्वपूर्ण विकासात्मक कार्य याने मलमुत्र विसर्जन पर बच्चे नियंत्रण रखते है। शैशवावस्था में ही बच्चों को अच्छी आदत लगने से बाद के कालावधि में बच्चे मलमुत्र विसर्जन पर नियंत्रण आराम से रखते

Teacher's Signature .....

Name of Practical

है। इनका भी अगर समय तैय किया गया या बाहर जाने की आदत लगाई गई तो बच्चे सी. सु. ऐसे कम शब्दों का उच्चारण करके बच्चे विकसित होते हैं। सोने के पहले और उठने के बाद बच्चों को मलमुत्र विसर्जन का कार्य सिखने के लिए मदद होती है।

2) व्यवहार में भाषा का उपयोग :- बच्चों में भाषा विकसित होने के पहले शैशवावस्था में अपनी महत्वपूर्ण आवश्यकताए हावभाव रोना आदि माध्यम का उपयोग करते है। दो से छे उम्र में बच्चों का शब्द संग्रह बढ़ता है और इनही शब्दों का ज्यादा-से-ज्यादा उपयोग बच्चे व्यवहार में करते। भाषा के द्वारा ही बच्चे खुद की आवश्यकताएँ व्यक्त करते है। भाषा यह संवाद प्रस्थापित करने का साधन है। उसी प्रकार अपनी भावना, प्रेम, राग दर्शाते है। भावनाओं का प्रगटीकरण करने के लिए भाषा का उपयोग किया जाता है। भाषा यह महत्वपूर्ण विकासात्मक कार्य माना जाता है।

3) लिंग भेद समझाता है :- इस अवस्था के बच्चो को लिंग भेद और सदाचार सिखाते है। लड़की और लड़का इनमें फरक समझते है। बच्चे खुद का लिंग और दूसरे साथीयों का निरिक्षण करते है।

Teacher's Signature .....

Name of Practical

उसी में से (मैं लड़का हूँ वह लड़की है) यह फरक बच्चो को समझता है। खेलते वक्त लड़के लड़कियाँ एक साथ खेलते है। उसी में लिंगभेद का प्रभाव बच्चों को समझ में आता है। लेकिन वातावरण के कारण भी लिंगभेद आचरण बच्चे सिखते है। एक ही परिवार के सभी उम्र के लड़के और लड़कीयाँ होती है।

4) सामाजिक और भौतिक वास्तव के बारे में सामान्यीकरण की संकल्पना तैयार करना :-

इस उम्र के बच्चे पुर्वानुभव के आधार पर संकल्पनाओं को अलग रूप देकर उसका सामान्यकरण करते है। बच्चों को लगता है की अपनी माता प्यार करने वाली है इसीलिए अपनी माता की उम्र की सभी औरते प्यार करनेवाली होती है। ऐसा उनका समझ होता है। बच्चों को भारी और हल्की वस्तु यह संकल्पना समझ में आती है। वस्तु का आकारमान छोटा या बड़ा समझ में आता है लेकिन पैसे की कदर (value) या व्यवहार कलदार का मूल्य ज्यादा होता है ऐसा बच्चों को लगता है।

5) गलत और सही इस संकल्पना का विकास होता है :- इस वैयोगट में गलत और २

Teacher's Signature .....

Factors That Affect
CHILD'S DEVELOPMENT

BHAGWATI
PAGE NO.: 5
DATE:

Name of Practical

सही बाते या उनकी संकल्पना व्यवहार में बच्चे उपयोग में लाते है।
उदा. जैसे की दुसरो की वस्तु लेना गलत है, किसी को मारना, किसी को चिढ़ाना, इस बातों की जानकारी उसी प्रकार किसी से मैनर्स से बात करना, प्यार से बात करना, अच्छे फल फूल यह सभी सही बाते बच्चों को सही लगती है। सही या गलत, अच्छा या बूरा आदि संकल्पनाएँ आजू-बाजू के वातावरण से ही बच्चे सिखते है। इसमें माता-पिता की प्रमुख भूमिका होती है। उनके वर्तन का, व्यवहार का और चरित्र के प्रभाव का बालकों के ऊपर परिणाम होता है चाहे अच्छा रहे या बूरा।

Teacher's Signature .....

BHAGWATI
PAGE NO.: 6
DATE :

Name of Practical

पूर्वबाल्यावस्था में बालकों के विकासात्मक कार्य का महत्व

1) बालकों की वृद्धि और विकास या इन दोनों से विकासात्मक कार्य निर्धारित होता है। उसके लिए कुछ बाते महत्वपूर्ण होती है।

2) पालक और शिक्षकों को बच्चों से कौनसी अपेक्षा करनी चाहिए इनका ज्ञान होता है।

3) विकासात्मक कार्य ध्यान में रखकर बच्चों को संधि उपलब्ध कर देते है। उसी प्रकार प्रोत्साहन देकर बच्चो की प्रगति विकसीत करने के लिए मदद होती है।

4) बालकों के हर एक अवस्था का विकासात्मक कार्य याने प्रगति के हरएक चरण पर बच्चे के विकास के लिए सफलता होती है।

Teacher's Signature .....

GROWTH & DEVELOPMENT

Normal Parameters & Abnormality

BHAGWATI
PAGE NO.: 7
DATE:

Name of Practical

शारिरीक विकास में अस्थि विकास

1) अस्थि विकास :- अस्थि की वृद्धि याने बालकों की ऊँचाई, वजन इसमें वृद्धि होना याने आकारमान में वृद्धि होना।

अस्थि की वृद्धि	अस्थियों का आकार अस्थियों की संख्या अस्थियों की रचना	स्नायू की परिपक्वता होकर वृद्धि और विकास होना है।

शरीर में हड्डियों के एकत्रीकरण की प्रक्रिया चालू रहती है। छोटी छोटी हड्डी मिलकर बड़ी और मजबूत हड्डी तैयार होती है। पूर्वबाल्यावस्था के अंतिम चरण में ये क्रिया हो जाती है। पूर्वबाल्यावस्था में हड्डीयों की वृद्धि अच्छि तरीके से हो जाती है। कार्टीलेज का प्रमाण कम होकर उसकी जगह पे कैलशियम फॉस्फेट का प्रमाण और बाकी के खनाज पदार्थ भी रहते है। उसके कारण

Teacher's Signature .....

- GROWTH AND DEVELOPMENT DEPENDS ON NOT ONLY ONE BUT A COMBINATION OF MANY FACTORS

Name of Practical

हड्डीयाँ मजबूत होकर हड्डीयों का आकार बढने लगता है।

1) मनगट :- पाँच साल तक के बच्चों के मनगट में छे या सात हड्डीया होती है। लेकिन इसमें व्यक्ति भिन्नता नियम लागू होता है।

जैसे की :- जिस बच्चों का अस्थिविकास गर्भ में ही अच्छा होता है। कैलशियम और फॉस्फरस सही तरीके से मिलता है, उसी प्रकार जन्म के बाद भी अच्छा पोषण और संतुलित आहार मिलने से बच्चो का अस्थिविकास अच्छा होता है। जिन बच्चों का आहार का दर्जा कम होता है, गर्भ में पोषण नहीं मिलता उनका अस्थि विकास भी मंद गति से होता है इसलिए बच्चे अशक्त होते है।

2) शरीर का आकारमान :- शरीर के आकार मान से ही बच्चों के शरीरयष्टी का प्रभाव दिखाई देता है। तीसरे साल में बालको की शरीर यष्टी कैसी होगी ये समझ में आता है। शरीरयष्टी निम्नलिखित होती है।

i) गोलाकार ii) आयानाकार iii) लंबाकार

Teacher's Signature .....

Milestones Maker

BHAGWATI
PAGE NO.: 9
DATE:

Name of Practical

i) गोलाकार :- इसमें टड्डीयों का आकार छोटा होना है इसलिए बच्चे स्थूल (मोटे) दिखते है। बच्चे गोलमटोल दिखते है। पेट बड़ा दिखता है और गर्दन दिखाई नहीं देती। त्वचा मुलायम होती है, बाल कम होते है।

ii) आयानाकार :- ऐसे शरीरयष्टी वाले बच्चे मजबूत होते है और कायक क्रियाओं में ज्यादा-से-ज्यादा मग्न रहते है। इनकी त्वचा चट्टट, मजबूत और मुलायम भी होती है। सर पे बालों का प्रमाण सामान्य होता है।

iii) लंबाकार शरीरयष्टी :- यह बच्चों की लंबाई ज्यादा होती है ऐसा शरीरयष्टी के बच्चे प्रौढ़ व्यक्तियों पर ज्यादा आधार लेते है। भावना प्रौढ़ी के होने कोई भी बात को ज्यादा समझते है।

Teacher's Signature .....